आत्मिक युद्ध को समझना, और "दो बीज"

फ्रैंकलिन के नोट्स

I. पहला विद्रोह : स्वर्गदूतों का पृष्ठ 2

II. मनुष्य का प्रवेश पृष्ठ 3

III. दूसरा विद्रोह : मनुष्य का पृष्ठ 4

IV. स्त्री का पहला बीज पृष्ठ 5

V. "स्त्री के पहले बीज" पर शैतान के बड़े हमले का परिणाम जलप्रलय था 8

VI. उद्धारकर्ता की वंशावली को दूषित करने का प्रयास पृष्ठ 11

VII. दो जातियों के समूह का युद्ध आज तेज़ी से फ़ैल रहा है पृष्ठ 14

VIII. नपीलियों के विरुद्ध अपना युद्ध जीतना पृष्ठ 14

IX. अधिक स्पष्टता देनेवाले पद पृष्ठ 18

X. हमारे प्रभु यीशु मसीह की महान विजय पृष्ठ 21

XI. अंत समय में जीना पृष्ठ 23

XII. विश्वासियों का बड़ा निर्गमन पृष्ठ 25

XIII. क्लेश पृष्ठ 28

XIV. पृथ्वी पर क्लेश लेकिन स्वर्ग में आनंद पृष्ठ 30

1. मसीह का न्याय सिंहासन
2. मेमने का विवाह भोज

XV. यीशु मसीह का दूसरा आगमन पृष्ठ 31

- सब विश्वासी, उसकी कलीसिया, उसकी दुल्हन, उसके पास लौट आएँगे
- पशु और झूठे भविष्यवक्ता का विनाश
- शैतान को एक हज़ार वर्ष के लिए बंदी बनाया जाना
- सब विश्वासी यीशु के साथ राज करेंगे
- केवल हज़ार वर्ष तक नहीं बल्कि सदा के लिए
- यह हज़ार वर्षों के राज को "प्रभु के दिन" के नाम से जाना जाता है

XVI. अंतिम न्याय – परमेश्वर का बड़ा श्वेत सिंहासन पृष्ठ 34

XVII. नया आकाश और नई पृथ्वी पृष्ठ 36

I. पहला विद्रोह : स्वर्गदूतों का

यशायाह 14:12-15 "हे **भोर के चमकनेवाले तारे** ("चमकनेवाले" यहीं से लूसिफ़र का नाम आता है), तू कैसे आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है? 13 तू मन में कहता तो था, '**मैं** स्वर्ग पर चढ़ूँगा; मैं अपने सिंहासन को **ईश्वर के तारागण** से अधिक **ऊँचा** करूँगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा, 14 **मैं** मेघों से भी ऊँचे ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ूँगा, **मैं परमप्रधान के तुल्य** हो जाऊँगा।' 15 परन्तु तू अधोलोक में उस गड़हे की तह तक उतारा जाएगा।

- अय्यूब 38 बताता है कि भोर के तारे और परमेश्वर के पुत्र — स्वर्गदूतों के दो भिन्न प्रकार हैं — जो परमेश्वर के साथ उस समय थे जब उसने पृथ्वी की रचना की।

  अय्यूब 38:4-7 "जब मैं ने **पृथ्वी की** नींव डाली, तब तू कहाँ था? ... जब कि **भोर के तारे** एक संग आनन्द से गाते थे और **परमेश्वर के सब पुत्र** जयजयकार करते थे? यह इस बात को दर्शाता है कि स्वर्गदूतों की सृष्टि पृथ्वी की सृष्टि से पहले हुई थी।

  फिर बाद में, पृथ्वी की सृष्टि के बाद, भोर के इस तारे या लूसिफ़र ने विद्रोह किया और उसे काटकर भूमि पर गिराया गया, तथा उससे उन सब विशेषाधिकारों को छीन लिया जो उसके पास स्वर्ग में थे : मैं ने तुझे अपवित्र जानकर **परमेश्वर के पर्वत** पर से उतारा।
  ये "परमेश्वर के पुत्र" उत्पत्ति छह में दुबारा प्रकट होंगे।

यहेजकेल 28:11-20 लूसिफर का विद्रोह हमें यह प्रकट करता है कि वह अपने गिराए जाने से पहले वह परमेश्वर की **अदन** नामक बारी में था और वहां एक याजक था क्योंकि उसने वह सब बहुमूल्य पत्थर पहने थे जो बाद में महायाजक हारून ने अपने सीनाबंद पर पहने थे। यदि "वाटिका" पृथ्वी पर थी या कहीं और, या परमेश्वर के अदन नामक कई वाटिकाएं थीं, ये स्पष्ट नहीं है।

परमेश्वर यहोवा यों कहता है : तू तो उत्तम से भी उत्तम है, तू पूर्णता पर छाप देता है ; तू बुद्धि से भरपूर और सर्वांग सुन्दर है। 13 **तू परमेश्वर की अदन नामक बारी में था**; तेरे पास आभूषण, माणिक, पद्मराग, हीरा, फीरोज़ा, सुलैमानी मणि, यशब, नीलमणि, मरकद, और लाल सब भाँति के मणि और सोने के पहिरावे थे; तेरे डफ और बाँसुलियाँ तुझी में बनाई गई थीं; जिस दिन **तू सिरजा गया था**, उस दिन वे भी तैयार की गई थीं। 14 तू छानेवाला अभिषिक्त करूब था, मैं ने तुझे ऐसा ठहराया **कि तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर** रहता था; तू आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच चलता फिरता था। 15 जिस दिन से तू **सिरजा** गया, और जिस दिन तक तुझ में **कुटिलता न पाई गई**, उस समय तक तू अपनी सारी चालचलन में **निर्दोष** रहा। 16 परन्तु लेन-देन की बहुतायत के कारण तू उपद्रव से भरकर **पापी हो गया**; इसी से मैं ने तुझे

अपवित्र जानकर **परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा**, और हे छानेवाले करूब मैं ने तुझे आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच से नष्ट किया है। 17 सुन्दरता के कारण तेरा **मन फूल उठा था**; और वैभव के कारण तेरी **बुद्धि बिगड़ गई थी। मैं ने तुझे भूमि पर पटक दिया**; और राजाओं के सामने तुझे रखा कि वे तुझ को देखें। 18 तेरे **अधर्म** के कामों की बहुतायत से और तेरे लेन-देन की **कुटिलता** से तेरे **पवित्रस्थान** अपवित्र हो गए; इसलिये मैं ने तुझ में से ऐसी आग उत्पन्न की जिस से तू भस्म हुआ, और मैं ने तुझे सब देखनेवालों के सामने भूमि पर भस्म कर डाला है। 19 देश देश के लोगों में से जितने तुझे जानते हैं सब तेरे कारण विस्मित हुए; तू भय का कारण हुआ है और फिर कभी पाया न जाएगा।"

- इसे पढ़कर ऐसा लगता है मानो उनके विद्रोह के समय **परमेश्वर की अदन** नामक बारी पृथ्वी पर नहीं बल्कि कहीं और थी, और फिर बाद में उसे आदम और हव्वा के रहने और उस पर राज करने के लिए उसे लाया गया या सृजा गया था। उत्पत्ति 2:8 यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन में एक वाटिका लगाई, और वहाँ आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया। यह आज पृथ्वी पर पाई नहीं जाती। उत्पत्ति 3:24

- मैं ने तुझे भूमि पर पटक दिया, और शैतान ने सोचा कि वह पृथ्वी का शासक है। लेकिन फिर मनुष्य का प्रवेश होता है, और उसे राज करने का अधिकार दिया जाता है; अब शैतान का नया शत्रु है।

II. मनुष्य का प्रवेश

उत्पत्ति 1:26-28 फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को **अपने स्वरूप** के अनुसार **अपनी समानता** में बनाएँ; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, **अधिकार रखें**।" 27 तब परमेश्वर ने **मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर** ने उसको उत्पन्न किया; **नर** और **नारी** करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, "**फूलो-फलो,** और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको **अपने वश में** कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं **पर अधिकार रखो**।"

- कुछ ऐसा जो बिलकुल नया था, और जिसे पहले कभी नहीं देखा था, वह **नर** और **नारी** करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, "**फूलो-फलो**"

- इफिसियों 3:11 उस **सनातन मनसा** के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी।

- मानवजाति के लिए यह परमेश्वर की योजना थी — **एक पुरुष एक स्त्री** — दो का एक हो जाना — संसार पर **संतान उत्पन्न करना और धार्मिकता के साथ राज करना।**

- अब शैतान ने परमेश्वर के साथ अपने युद्ध को विस्तृत किया और उसमें समस्त मानवजाति को शामिल किया। उसने हर संभव प्रयास किया कि पुरुष और स्त्री को बच्चे उत्पन्न करने से रोके ताकि वे पृथ्वी पर फलें-फूलें नहीं और न उस पर राज करें। हम आज जब पुरुष को पुरुष से और स्त्री को स्त्री से विवाह करते देखते हैं तो इसका स्पष्ट परिणाम देखते हैं ... कोई बच्चे नहीं।

III. दूसरा विद्रोह : मनुष्य का

उत्पत्ति 3:1-7 अब सर्प ने स्त्री से कहा, "क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा ... तुम निश्चय न मरोगे! ... उस **स्त्री ने खाया**, ... उसके **पति ने भी खाया।** 14 तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा ... 15 मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और **तेरे वंश** (संतान) और **इसके वंश** (संतान) के बीच में **बैर** (घृणा) उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।

- बाइबल की अन्य कई भविष्यवाणियों के समान इस भविष्यवाणी में भी वर्तमान और भविष्य की पूर्ति है। वर्तमान में : शैतान और स्त्री की संतानों के बीच घृणा। भविष्य : प्रभु यीशु मसीह और मसीह-विरोधी।

- तेरे सिर को कुचल डालेगा : तोड़ना, कुचलना, या प्रतीकात्मक रूप से विजय पाना। एड़ी को डसेगा : एक हल्का घाव जो चलने की गति को धीमे कर सकता है।

- "वंश" का तात्पर्य संतानों या वंश से है। उत्पत्ति 22:17, व्यवस्थाविवरण 10:15, यशायाह 53:10, रोमियों 4:13 और 16, गलातियों 3:29. और बैर के लिए देखें प्रकाशितवाक्य 12:17

- आदम ने परमेश्वर पर और इस भविष्यवाणी पर विश्वास किया कि उसकी पत्नी की संतान होंगी और उसने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा, जिसका अर्थ है "जितने मनुष्य जीवित हैं उन सब की आदिमाता।" और उसने यह भी विश्वास किया कि उसकी एक संतान सर्प को पराजित कर देगा।

- हव्वा, जितने मनुष्य जीवित हैं उन सब की आदिमाता है, **इसलिए "शैतान का वंश" केवल हव्वा या उसकी पत्रियों के द्वारा ही अस्तित्व में आ सकता था।**

- **युद्ध तेज़ी पकड़ता है** : शैतान अब जान जाता है कि उस "स्त्री का" एक वंशज, एक बालक उसे पराजित करेगा। इसलिए उसका यह प्रमुख उद्देश्य बन जाता है कि वह **इस बालक को नष्ट कर दे,** या अपने वंश, अपनी संतानों को उत्पन्न करने के द्वारा उस बालक के जन्म को रोके, परमेश्वर के लोगों को और शायद **उस स्त्री के वंश को** भी भ्रष्ट और नष्ट कर दे जो एक दिन उसके **सिर को कुचल डालेगा।**

- पूरे पुराने नियम और नए नियम के कई सवालों, जिन्हें हम बाद में देखेंगे, उनके उत्तरों की स्पष्ट समझ के लिए इस सच्चाई को जानना बहुत महत्वपूर्ण है।

- **शैतान के वंश**, या संतान हैं जिनकी पुष्टि हमें प्रभु के उस कथन से हो जाती है जो उसने जंगली बीज के

दृष्टान्त में, और अन्य स्थान पर दिया था।

मत्ती 13:37-43 **अच्छे बीज** का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है … अच्छा बीज **राज्य की सन्तान** हैं; और जंगली बीज **दुष्ट की सन्तान** हैं। जिस शत्रु ने उनको बोया वह **शैतान** है; कटनी जगत का अन्त है, और काटनेवाले स्वर्गदूत हैं। 40 अत: जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और **जलाए जाते** हैं **वैसा ही** जगत के अन्त में होगा। 41 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करनेवालों को इकट्ठा करेंगे 42 और उन्हें **आग के कुण्ड** में डालेंगे, जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। 43 उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। जिसके कान हों वह सुन ले।

- और यूहन्ना 8:44 तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। से -> यूनानी "ἐκ (ऐक)" में से, उत्पन्न मूल

- **प्रेरितों के काम 13:7-10** में पौलुस इनमें से एक को "शैतान की सन्तान" कहकर पुकारता है। हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए **शैतान की सन्तान**

- इस सच्चाई के विषय में और भी कई पद हैं

IV. स्त्री का पहला बीज

उत्पत्ति 4:1-2 जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया तब उस ने गर्भवती होकर **कैन** को जन्म दिया और कहा, "मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरुष पाया है।" 2 फिर उसने उसके भाई **हाबिल** को भी जन्म दिया। हाबिल भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया, परन्तु कैन भूमि पर खेती करने वाला किसान बना।

- मानव इतिहास में कैन पहला पुत्र था और उसके बाद हाबिल हुआ। उत्पत्ति 3:15 की भविष्यवाणी के कारण वे शैतान के उन प्रयासों का केंद्र बन गए कि वह उन्हें भ्रष्ट कर दे या मार डाले।

- इन बालकों ने निश्चय ही अपने पिता आदम से, जो परमेश्वर के साथ-साथ वाटिका में चलता था, सही और गलत के बारे में बहुत कुछ सुना होगा। 4:3 कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया, उस भूमि से जो शापित थी और यह हमारे अपने कार्य और प्रयत्नों को, अर्थात "धर्म" को दर्शाता था। उसने परमेश्वर का या अपने पिता की शिक्षाओं का आदर नहीं किया, यह एक प्रकार का विद्रोह था, जो केवल स्वयं पर, अपने मार्गों और इच्छाओं पर केन्द्रित था। 4:4 और हाबिल भी अपनी भेड़-बकरियों के कई एक पहलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया

4:6-7 तब यहोवा ने कैन से कहा, "तू क्यों क्रोधित हुआ? … और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर

छिपा रहता है; और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तुझे उस पर प्रभुता करनी है।"

- **पहली हत्या :** कैन पर दया की गई लेकिन उसने परमेश्वर के **वचनों को तुच्छ जाना** और **विद्रोह किया तथा अपने भाई हाबिल को मार डाला।** यह उस प्रकार के वचन थे जैसे यीशु ने अब्राहम की कुछ संतानों (बीज) के लिए कहे थे :

  यूहन्ना 8:37 मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता।

- शैतान ने एक और युद्ध जीता जब उसने **एक पुत्र को मार दिया और दूसरे को अपने वश में कर लिया।**

उत्पत्ति 4:9 तब यहोवा ने कैन से पूछा, "तेरा भाई हाबिल कहाँ है?" उसने कहा, "**मालूम नहीं**; क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?"

पहला झूठा मनुष्य, जो अपने आत्मिक पिता शैतान की तरह था, "तुम निश्चय न मरोगे!" यह मुझे वह स्मरण कराता है जो यीशु ने अविश्वासियों के समूह से कहा था :

यूहन्ना 8:44-45 तुम **अपने पिता शैतान से हो** और **अपने पिता** की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से **हत्यारा** है और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि **सत्य उसमें है ही नहीं।** जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि **वह झूठा है वरन् झूठ का पिता है।**

- झूठ बोलना शैतान से है। जब कोई सच्चा विश्वासी झूठ बोलता है, तो वह शैतान के द्वार खोल देता है कि वह आकर उसके जीवन को और अधिक प्रभावित करे। इफिसियों 4:25 और 27

1 यूहन्ना 3:11-12 ... हम एक दूसरे से प्रेम रखें; और **कैन** के समान न बनें जो उस **दुष्ट से** (ἐκ) था, और जिसने अपने भाई को घात किया। और उसे किस कारण घात किया? इस कारण कि उसके **काम बुरे** थे, और उसके **भाई** के काम **धर्म** के थे। उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। मत्ती 7:16

से **->** यूनानी "εκ" उद्गम के स्थान की ओर संकेत करता है, जहाँ से क्रिया का आरम्भ हुआ -> **वह दुष्ट**। कैन शैतान का "बीज", उसकी सन्तान था।

नीकुदेमुस से बात करते हुए यीशु ने उत्पत्ति 3:15 और "दो बीज" के तथ्य की पुष्टि की।

यूहन्ना 3:3-8 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे (ανωθεν (अक्षरशः **ऊपर से**, या आरम्भ से) तो परमेश्वर का राज्य देख (ιδειν – देखना या **समझना**) नहीं सकता।" (**प्रवेश नहीं** लेकिन देखना)

(4) नीकुदेमुस ने उस से कहा, "मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?"

- नीकुदेमुस इस बात में सही था कि यीशु "स्वाभाविक जन्म" की बात कर रहा था। लेकिन उसने यह **गलत समझा** कि यीशु मनुष्य के स्वाभाविक जन्म के उद्गम के बारे कह रहा है। नीकुदेमुस का कथन यीशु के शब्दों का सही अर्थ नहीं बताता बल्कि यही दर्शाता है कि वह उसकी बात को समझने में असफल रहा।

- बाइबल में अकसर लोग यीशु को गलत समझे। **नीकुदेमुस द्वारा गलत अर्थ लगाने को** हम पद 10 में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं यीशु ने उससे कहा, "तू इस्राएलियों का गुरु होकर भी क्या इन बातों को नहीं समझता?

"फिर से" के लिए शब्द है (παλιν - **पालिन**) और इसका इस्तेमाल नए नियम में 171 बार हुआ है।

इस पद में शब्द (παλιν) का प्रयोग **नहीं हुआ**, बल्कि शब्द (ἄνωθεν) का हुआ है।

यदि (ἄνωθεν) का अनुवाद इस परिच्छेद में अपने नियमित अर्थ के साथ होता, तो नए नियम में किसी भी स्थान पर उसका अनुवाद "फिर से" के रूप में होता।

- शब्द (ἄνωθεν) को "फिर से" के रूप में अनुवाद करना, शब्दार्थ से भटकना और अटकलबाजी करना है।

बाइबल हमें बताती है कि **इस संसार में लोगों के कई उद्गम होते हैं।** अर्थात : **सब परमेश्वर "से" उत्पन्न नहीं होते।**

यूहन्ना 1:12-13 परन्तु जितनों ने उसे **ग्रहण किया**, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान *होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर **विश्वास** रखते हैं। 13 वे (1) **न तो लहू से**, (2) न शरीर की इच्छा से, (3) न मनुष्य की **इच्छा** से, परन्तु (4) **परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।**

- 1, 2 और 3 स्वाभाविक जन्म की बात करते हैं, अतः अनुवाद के नियमों के अनुसार नम्बर 4 भी **स्वाभाविक जन्म** की बात करता है। आत्मिक जन्म की नहीं।

* होना एओरिस्ट क्रिया में है : ऐसी क्रिया जो हो चुकी है और बोलने के समय से पूर्व वह समाप्त हो गई थी। इस क्रिया का मुख्य अर्थ **होना आरम्भ करना है, अर्थात अस्तित्व में आना, या केवल होना।** (from The Complete Word Study Dictionary: New Testament © 1992 by AMG International, Inc. Revised Edition, 1993)

दी अपोलोजेटिक्स स्टडी बाइबल इस में सहमत है कि होना सही अनुवाद है **न कि "बनना"** जो उस समय क्रिया होने को लाता है जब व्यक्ति विश्वास करता है। यह एक धर्म-वैज्ञानिक मान्यता है और सटीक अनुवाद नहीं।

- सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर पिता है और उसने अपनी संतानों को, उनके परिवारों को जगत की उत्पत्ति से पहले **चुन** लिया है। इफिसियों 1:4

- उसकी संतानों ने विश्वास किया क्योंकि वे परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं, उसके बीज से।

उत्पत्ति 4:16 तब **कैन यहोवा के सम्मुख से निकल गया**, और नोद नामक देश में जो अदन के पूर्व की ओर है, रहने लगा।

- कैन ने अपनी पीठ फेर ली और परमेश्वर से दूर चला गया।

- पद 17–24 कैन की वंशावली से बताता है कि लेमेक ने **दो स्त्रियाँ ब्याह लीं**, जो परमेश्वर द्वारा ठहराए गए नियम "**एक पुरुष और एक स्त्री**" (उत्पत्ति 2:24) का प्रथम उल्लंघन है। लेमेक **बहु-विवाह प्रथा** का जन्मदाता है, और उसने अपने पूर्वज कैन की तरह एक व्यक्ति का घात किया, और इस प्रकार उसने इस **वंश की दुष्टता** को प्रकट किया।

उत्पत्ति 4:25-26 आदम अपनी पत्नी के पास फिर गया, और उसने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम यह कह के **शेत** रखा : "परमेश्वर ने मेरे लिये **हाबिल के बदले** जिसको कैन ने घात किया, एक और **वंश** (अक्षरशः बीज) ठहरा दिया है।" 26 शेत के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम **एनोश** रखा; **उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे।**

- आदम, शेत, और उसका पुत्र एनोश, यह वंशावली यहोवा से प्रार्थना करने लगी।

यह चुनी हुई वंशावली, या बीज है जिससे वह विजयी उद्धारकर्ता आएगा जो सर्प का सिर कुचल देगा।

- **अब हमारे पास दो वंशावली हैं, पृथ्वी पर दो पुरुषों की वंशावली।** एक जो परमेश्वर से फिरकर दूर चला गया और दूसरा जो परमेश्वर की ओर आया।

- उत्पत्ति 4:25 से लेकर अध्याय 5:32 तक हमें आदम से शेत और उससे नूह तक की वंशावली मिलती है। और हर वंशज के नाम के साथ यह वाक्यांश जुड़ा है : उसके और भी बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं, तो पृथ्वी पर आबादी बढ़ गई।

- **आदम से नूह** तक 1,556 वर्षों की अवधि थी। और **नूह** पाँच सौ वर्ष का हुआ; और नूह से **शेम**, और **हाम**, और **येपेत** का जन्म हुआ।

V. "स्त्री के पहले बीज" पर शैतान के बड़े हमले का परिणाम जलप्रलय था

उत्पत्ति 6:1-14 फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत बढ़ने लगे (आदम से नूह तक 1,556 वर्ष), और उनके

बेटियाँ उत्पन्न हुईं, [2]तब **परमेश्वर के पुत्रों** ने (पुराने नियम में यह शब्द सदैव स्वर्दूतों के लिए इस्तेमाल होते हैं : अय्यूब 1:6, 2:1, 38:7) मनुष्य की पुत्रियों को देखा, कि वे सुन्दर हैं (उनके प्रति वासना से भर गए), और उन्होंने जिस जिसको चाहा उनसे विवाह कर लिया। (लेमेक के पदचिह्नों पर, जो पहला बहु-विवाही था जिसने दो पत्नियाँ ब्याही थीं। उत्पत्ति 4:19) [4]उन दिनों में पृथ्वी पर दानव (अर्थात्, नपीली लोग) रहते थे; और इसके पश्चात् जब **परमेश्वर के पुत्र मनुष्य** की पुत्रियों के पास गए तब **उनके द्वारा जो पुत्र उत्पन्न हुए वे** (नपीली पुत्र) शूरवीर (योद्धा, निरंकुश या दानव) होते थे, जिनकी कीर्ति प्राचीनकाल से प्रचलित है।

- ये **"परमेश्वर के पुत्र"** परमेश्वर द्वारा सृजे गए **स्वर्गदूत** थे, जिन्हें **नीचे गिराया** गया था, क्योंकि उन्होंने "लूसिफर" के साथ मिलकर परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था (यहेजकेल 28:12-19)। उनका एक ही **उद्देश्य था कि उन सब का नाश करना** जिन्हें परमेश्वर ने सृजा है और जिनसे वह प्रेम रखता है। विशेषकर **लोग**, जो उसके स्वरूप में रचे गए थे।

- यहूदा 6-7 फिर जिन **स्वर्गदूतों** ने अपने पद (या अधिकार क्षेत्र) को स्थिर न रखा वरन् अपने निज निवास (या निवासस्थान) (मनुष्य की पुत्रियों की लालसा से प्रेरित होकर) को छोड़ दिया, उसने उनको भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में, जो सदा काल के लिये है, बन्धनों में रखा है। **जिस रीति** से सदोम और अमोरा और उनके आसपास के नगर, जो **इन के समान व्यभिचारी** हो गए थे और पराये शरीर के पीछे लग गए थे, आग के अनन्त दण्ड में पड़कर **दृष्टान्त** (परमेश्वर इस विकृति से कितना घृणा करता है) ठहरे हैं।

शैतान जो इन गिराए हुए दूतों का नेता था, उसने उनसे कहा कि वे जिस जिसको चाहें उनसे **विवाह** कर लें, जिससे मनुष्य का लहू, उसका वंश, डीएनए या आनुवांशिक क्रम दूषित हो जाए और स्त्री का वंश तथा उसके सिर कुचले जाने की भविष्यवाणी को रोका जा सके।

- इन गिराए हुए दूतों के पास स्त्रियों को गर्भवती करने और बच्चे उत्पन्न करने की शक्ति थी, जैसा उत्पत्ति छह कहती है, तो इसका अर्थ यह है कि मनुष्य के वंशाणु भ्रष्ट हो गए। यह स्त्री के बीज को दूषित करने का एक और हमला था।

    - वह सर्प, शैतान पृथ्वी पर "**अपने बीज**", अपनी संतानों को बढ़ाने में लगा है ताकि परमेश्वर के लोगों को, **स्त्री के बीज** को भ्रष्ट और नष्ट कर दे। **मनुष्य को अपने जाल में फंसाने के लिए उसका हथियार, लैंगिक आनंद** था। यह युद्ध समस्त विश्व में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हर मसीही को यह जानने की ज़रूरत है, और अवश्य है कि वह **जवानी की अभिलाषाओं से भागे**, और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं उनके साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेलमिलाप का पीछा करे। 2 तीमुथियुस 2:22-23

- ये संतान वे हो सकती हैं जिनके विषय में प्रभु ने कहा कि वे उस दुष्ट की संतान हैं या वे जंगली बीज हैं जिन्हें शैतान ने बोया। **मत्ती 13:37-39** अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है। **... अच्छा बीज** राज्य की सन्तान, और **जंगली बीज दुष्ट की सन्तान** हैं। जिस शत्रु ने उनको बोया वह शैतान है। **और यूहन्ना 8:44 तुम अपने पिता शैतान** से हो और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो।

- **प्रेरितों के काम 13:7-10** में पौलुस इनमें से एक को "शैतान की संतान" कहकर पुकारता है
  हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए **शैतान की सन्तान**

उत्पत्ति 6 पर वापस आते हैं :

5 यहोवा ने देखा कि **मनुष्यों की बुराई** पृथ्वी पर **बढ़ गई** है, और उनके मन के **विचार** में **जो कुछ** उत्पन्न
होता है वह **निरन्तर बुरा** ही होता है। 6 और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से **पछताया**, और वह मन
में अति **खेदित** हुआ। 7 तब यहोवा ने कहा, "मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा
दूँगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूँगा, क्योंकि मैं उनके
बनाने से पछताता हूँ।" 8 परन्तु **यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।** 9 नूह की वंशावली यह है। नूह
धर्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में **खरा** था; और नूह **परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा।** और नूह
से शेम, और हाम, और येपेत नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए। 11 उस समय **पृथ्वी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़
गई थी, और उपद्रव से भर गई थी।** 12 और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा कि वह **बिगड़ी**
हुई है; क्योंकि **सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना अपना चाल-चलन बिगाड़ लिया था।** 13 तब परमेश्वर ने
नूह से कहा, "सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है; क्योंकि उनके कारण **पृथ्वी उपद्रव से
भर गई है**, इसलिये **मैं उनको पृथ्वी समेत नष्ट कर डालूँगा।**

- नपीली लोगों से इतनी तेज़ी से नैतिक गिरावट आई कि उनके (मनुष्य के) मन के **विचार** में **जो कुछ** उत्पन्न होता है वह **निरन्तर बुरा** ही होता है।

- **सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना अपना चाल-चलन बिगाड़ लिया था।** यह बची हुई मानवजाति के अस्तित्व पर और स्त्री के बीज की भविष्यवाणी पर गंभीर हमला था।

- नपीली लोगों का डीएनए आधा मनुष्य और आधा पतित स्वर्गदूतों का था। इसका परिणाम दुष्टता, और बुरे स्वभाव की तीव्र वृद्धि में हुआ।

इसलिए, जलप्रलय ने शैतान के इस षड्यंत्र को नाकाम कर दिया।

- **परन्तु, एक मनुष्य बचा था** ... 9 **नूह धर्मी पुरुष** और अपने समय के लोगों में **खरा** था; और नूह **परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा।** 13 तब परमेश्वर ने नूह से कहा, "सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है; क्योंकि उनके कारण **पृथ्वी उपद्रव से भर गई है**, इसलिये **मैं उनको पृथ्वी समेत नष्ट कर डालूँगा।**
- नूह उसी शेत की वंशावली से था, आदम का पुत्र था ... और आदम के द्वारा उसकी समानता में उस ही के स्वरूप के अनुसार एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसने उसका नाम शेत रखा। उत्पत्ति 5:3

- जल प्रलय के तीन उद्देश्य थे : (1) नपीली जाति को नष्ट करना (2) उन लोगों को नष्ट करना जिनका डीएनए भ्रष्ट हो चुका था, और (3) उन सब को जिन्होंने अपने मार्गों को भ्रष्ट कर दिया था।

- जब ये नपीली दानव जलप्रलय में मरे, फिर/ या बाद में, **उनकी आत्माएं** अपनी देह से **अलग होकर** पृथ्वी

पर दूसरी देह की तलाश में भटकने लगी ताकि वे उनमें वास करें और समस्त मानवजाति में उसी **अनैतिक, विकृत लैंगिक आचरण** को बढ़ावा दे।
यीशु ने मत्ती 12:43-45 में इसकी पुष्टि की
"जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है (यूनानी : एक्सर्खोमाई/एक्सासिस्म), तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढती फिरती है, और पाती नहीं। तब कहती है, 'मैं अपने उसी **घर** में जहाँ से निकली थी, **लौट जाऊँगी।**' और लौटकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है। तब वह जाकर अपने से और **बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है,** और वे **उसमें पैठकर वहाँ वास करती हैं**, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है। **इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।"**

- वे स्वर्गदूत जिन्होंने स्त्रियों की लालसा की और उनसे संतान उत्पन्न की, उन्हें आनंद दंड भुगतना पड़ा :
    - स्वर्गदूतों को ब्याह करने की अनुमति नहीं है। मत्ती 22:30

यहूदा 5-6 प्रभु ने एक कुल को मिस्र देश से छुड़ाने के बाद विश्वास न लानेवालों को नष्ट कर दिया। फिर जिन **स्वर्गदूतों** ने **अपने पद को स्थिर न रखा** वरन् अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में, जो **सदा काल** के लिये है, **बन्धनों** में रखा है।

1 पतरस 3:19 यीशु ने जाकर **कैदी आत्माओं** (स्वर्गदूतों या परमेश्वर के पुत्रों) **को भी प्रचार किया**, 20 जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी, जब परमेश्वर **नूह के दिनों** में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था

स्मरण रखें : यीशु ने हमें चेतावनी दी है : मत्ती 24:37
जैसे **नूह के दिन** थे, **वैसा ही** मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।

ये दुष्ट अशुद्ध आत्माएं अब भी इस पृथ्वी पर हैं। वे जलप्रलय में मारी नहीं गईं, वे केवल उन शरीरों में से निकल गई थीं जिनमें उनका वास था।

सब आत्माएं अनंत होती हैं ... अनंतकाल की आग या अनंतकाल का जीवन।
ये दुष्ट अशुद्ध आत्माएं किसी भी व्यक्ति में समाने का अवसर ढूँढती हैं कि विकृत लैंगिक आचरण और अनैतिकता को बढ़ावा दें।

VI. उद्धारकर्ता की वंशावली को दूषित करने का प्रयास

एज्रा 9:1-4 जब ये काम हो चुके, तब हाकिम मेरे पास आकर कहने लगे, "**न** तो इस्राएली **लोग, न याजक, न लेवीय इस ओर के देशों के लोगों से अलग हुए**; वरन् उनके से, अर्थात् **कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों,**

यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्रियों और **एमोरियों** के से **घिनौने** काम करते हैं। **(क्यों)** 2 क्योंकि **उन्होंने उनकी बेटियों में से अपने और अपने बेटों के लिये स्त्रियाँ कर ली हैं; और पवित्र वंश (अक्षरशः बीज) इस ओर के देशों के लोगों में मिल गया है।** वरन् हाकिम और सरदार इस विश्वासघात में मुख्य हुए हैं।" 3 यह बात सुनकर मैं ने अपने वस्त्र और बागे को फाड़ा, और अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोचे, और विस्मित होकर बैठा रहा। 4 तब जितने लोग इस्राएल के परमेश्वर के वचन सुनकर बँधुआई से आए हुए लोगों के विश्वासघात के कारण थरथराते थे, सब मेरे पास इकट्ठे हुए, और मैं साँझ की भेंट के समय तक विस्मित होकर बैठा रहा।

- **कनानी** और **अन्य सब** जातियाँ नूह के पुत्र **हाम** के वंश से थीं जिसने अपने पिता के नंगेपन को देखा था। हाम **लैंगिक अनैतिकता** की **नपीली आत्मा** से प्रेरित था या वह उसमें समाई थी। याद करें, जलप्रलय से पहले हाम नपीली और पतित स्वर्गदूतों के साथ था।

- उसके भाई शेम और येपेत ने उस नंगेपन को **नहीं देखा।** वे **नपीली अनैतिक आत्मा से मुक्त थे।**

- नूह ने हाम के पुत्र **कनान** को श्राप दिया और उससे **यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी, हिब्बी** और अन्य जातियाँ निकलीं (उत्पत्ति 9:22-25; 10:15-20).

- **कनान के वंश** के सब लोग "शैतान के बीज" और लैंगिक अनैतिकता को लिए हुए थे। इसी कारण परमेश्वर ने कहा :

निर्गमन 23:20-3322 … मैं तेरे शत्रुओं का शत्रु और तेरे द्रोहियों का द्रोही बनूँगा। 23 इस रीति **मेरा दूत** तेरे आगे आगे चलकर तुझे **एमोरी, हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिब्बी**, और **यबूसी** लोगों के यहाँ पहुँचाएगा, और **मैं उनका सत्यानाश कर डालूँगा।** 24 उनके देवताओं को दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना, और न **उनके से काम** करना, वरन् **उन मूरतों का पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना**, और उन लोगों की लाटों को टुकड़े टुकड़े कर देना।

- हमें अब समझ लेना चाहिए कि परमेश्वर ने क्यों कहा, मैं उनका सत्यानाश कर डालूँगा।

- यशायाह 34:5 क्योंकि मेरी तलवार आकाश में पीकर तृप्त हुई है; देखो, वह न्याय करने को एदोम पर, और जिन पर **मेरा शाप** है उन पर पड़ेगी।इसे समझने का एकमात्र उपाय यह है ...

- परमेश्वर "**स्त्री के बीज"** को बनाए रखने और उसके वंश को दूषित होने से बचाने के लिए जो कुछ आवश्यक है वह करेगा। यहाँ तक कि वह "सर्प के बीज" जैसे शक्तिशाली शत्रु का भी सत्यानाश कर देगा।"

इसका स्पष्ट उदाहरण है : 1 शमूएल 15:1-3 तब शमूएल ने शाऊल से कहा, "यहोवा ने मुझे भेजा था कि उसकी प्रजा इस्राएल पर राजा होने के लिए मैं तेरा अभिषेक करूँ। इसलिए, अब यहोवा के वचनों को सुन। सेनाओं का यहोवा यह कहता है, 'इस्राएल के साथ **अमालेक ने जो कुछ किया था उसके लिए मैं उसको दण्ड**

दूँगा क्योंकि जब इस्राएल मिस्र से निकल कर आ रहा था तब अमालेक ने उसके मार्ग में उसका किस प्रकार विरोध किया था। अब जा, और **अमालेक** पर चढ़ाई करके **उसका जो कुछ है वह सब पूर्णतया नाश कर दे, और उसको भी मत छोड़ना। परन्तु पुरुष, स्त्री, बालक, शिशु, गाय-बैल, भेड़-बकरी, ऊँट-गदहा सबको सत्यानाश कर देना'।"** क्यों ?

- अमालेक "शैतान के बीज" का वंशज था। एसाव के पुत्र एलीपज के तिम्ना नामक एक रखैल थी, जिसने एलीपज के द्वारा **अमालेक** को जन्म दिया उत्पत्ति 36:12.

  और जैसा मलाकी 1:3 में और रोमियों 9:13 में बताया है मैं ने याकूब से प्रेम किया परन्तु **एसाव** को **अप्रिय जाना।** क्यों? परमेश्वर जानता था कि वह उस दुष्ट "**से**" है।

  यह यूहन्ना 1:12 का उदाहरण है : परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान **होने** का अधिकार दिया (उसे कौन ग्रहण करते हैं?), अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं (कौन? उस पर विश्वास करते हैं? वे...)। 13 वे (1) **न** तो लहू से, (2) **न शरीर की इच्छा से**, (3) **न मनुष्य की इच्छा से,** परन्तु (4) **परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।** (www.treasurehisword.com पृष्ठ 3 पर देखें "ऊपर से जन्मे" के नोट्स)
    - यदि 1, 2 और 3 स्वाभाविक जन्म की बात करते हैं, तो अनुवाद के नियमों के अनुसार नम्बर 4 भी स्वाभाविक जन्म की बात करता है।

- एसाव **शरीर की इच्छा से** और **मनुष्य की इच्छा से** उत्पन्न हुआ था, **परमेश्वर से नहीं।** जो एक बार फिर स्पष्ट रूप से आज संसार पर दो वंश के स्रोत को दर्शाता है।

- याकूब और एसाव, इसहाक और रिबका के जुड़वां थे : उत्पत्ति 25:23-24 तब यहोवा ने उससे कहा,"तेरे गर्भ में **दो जातियाँ हैं,** (दो अलग-अलग जातियाँ) और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के लोग अलग अलग होंगे, (दो अलग-अलग वंश) और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे, और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा।" जब उसके प्रसव का समय आया, तब क्या प्रगट हुआ कि उसके गर्भ में जुड़वे बालक हैं।

    - **दो जातियाँ** : याकूब **परमेश्वर से उत्पन्न** था।
    - एसाव **शरीर की इच्छा से** और **मनुष्य की इच्छा से** उत्पन्न हुआ था।

एक और उदाहरण :

उत्पत्ति 16:3-4 अब्राम की स्त्री **सारै** ने अपनी **मिस्री** दासी हाजिरा को लेकर **अपने पति अब्राम को दिया, कि वह उसकी पत्नी हो।** 4 वह हाजिरा के पास गया, और **वह गर्भवती हुई** ... 11 और यहोवा के दूत ने उससे कहा, "देख, तू गर्भवती है, और पुत्र जनेगी; तू **उसका नाम इश्माएल रखना**, क्योंकि यहोवा ने तेरे दुःख का हाल (परमेश्वर की करुणा) सुन लिया है। 12 और **वह मनुष्य बनैले गदहे के समान** होगा, **उसका हाथ सब के विरुद्ध उठेगा** और सब के हाथ उसके विरुद्ध उठेंगे; और वह अपने सब भाई-बन्धुओं के मध्य में

बसा रहेगा।”

- **इश्माएल शरीर की इच्छा** और **मनुष्य की इच्छा** से उत्पन्न हुआ था, **परमेश्वर से नहीं।** यह एक बार फिर इस संसार में लोगों के दो स्रोत या वंश को दर्शाता है

- **इसहाक** का जन्म **परमेश्वर से** हुआ था।

- गलातियों 4:22-29 यह लिखा है कि अब्राहम के **दो पुत्र** हुए; एक दासी से और एक स्वतंत्र स्त्री से। 23 परन्तु **जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा;** और **जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा।** 24इन बातों में दृष्टान्त है : ये स्त्रियाँ मानो **दो वाचाएँ** हैं, एक तो सीनै पहाड़ की जिससे दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह **हाजिरा** है। 26पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है। 28 **हे भाइयो, हम इसहाक के समान प्रतिज्ञा की सन्तान हैं।** 29 और जैसा उस समय **शरीर के अनुसार जन्मा हुआ** (एसाव) **आत्मा के अनुसार जन्मे हुए** (याकूब) को सताता था, **वैसा ही अब भी होता है।**

- 1 यूहन्ना 3:8 -10 जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है, ... जो कोई **परमेश्वर से जन्मा** है वह पाप नहीं **करता**; क्योंकि **उसका बीज** उसमें बना रहता है, और वह पाप कर ही नहीं सकता (क्योंकि कोई समय आएगा जब वह विश्वास करेगा) क्योंकि **परमेश्वर से जन्मा** है। (10) इसी से **परमेश्वर की सन्तान** और **शैतान की सन्तान** जाने जाते हैं; जो कोई धर्म के काम नहीं करता वह परमेश्वर से नहीं, और न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता।

यह सब “बीज” की वंशावली के विषय में है। इसे पूरी बाइबल में अनेक वंशावलियों में देखा जा सकता है : उत्पत्ति 9 और 10 से और मत्ती 1:1-17 तथा लूका 3:23-38 तक

VII. दो जातियों के समूह का युद्ध आज तेज़ी से फ़ैल रहा है और भयंकर होगा।

इफिसियों 6:10-13 इसलिये प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। 11 परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। 12 क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं (यह परमेश्वर की ज़िम्मेदारी है) परन्तु (हमारा युद्ध) प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। 13 इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको ... 16 स्थिर रहो क्योंकि यीशु ने कहा :

जैसे **नूह के दिन** थे, **वैसा ही** मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।

VIII. नपीलियों के विरुद्ध अपना युद्ध जीतना

इससे पहले कि यहोशू इस्राएली लोगों को प्रतिज्ञात देश में लेकर जाता, मूसा ने परमेश्वर की ओर से बोलते हुए कहा: उनमें **बड़े बड़े** और **लम्बे लम्बे** लोग अर्थात् **अनाकवंशी** (जिन्हें नपीली भी कहा जाता था,

नीचे पद में देखें) रहते हैं जिनका हाल तू जानता है, और उनके विषय में तू ने यह सुना है, कि **अनाकवंशियों** के सामने कौन ठहर सकता है? **इसलिये** आज तू यह **जान ले** कि जो तेरे आगे **भस्म करनेवाली आग** के समान पार जानेवाला है वह तेरा **परमेश्वर यहोवा** है; और **वह उनका सत्यानाश करेगा**, और वह उनको तेरे सामने दबा देगा; और तू यहोवा के वचन के अनुसार उनको उस देश से निकालकर **शीघ्र ही नष्ट कर डालेगा।** व्यवस्थाविवरण 9:2,3 **क्यों? क्योंकि वे दुष्ट के बीज थे।**

- सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर हमारे साथ है, और जहाँ कहीं भी हम जाते हैं और जहाँ कहीं भी वह हमें भेजता है, वह हमें विजय प्रदान करता है। 1 कुरिन्थियों 15:57; 2 कुरिन्थियों 2:14

जब इस्राएली लोग प्रतिज्ञात देश में गए, तो उन्होंने **दानव समान नपीली** लोगों को देखा : वे शूरवीर होते थे, जिनकी कीर्ति प्राचीनकाल से थी, और वे उत्पत्ति 6:4 में वर्णित पतित स्वर्गदूतों और मनुष्य की पुत्रियों के पुत्र थे।

इनकी विस्तृत जानकारी के लिए उत्पत्ति 6 और "आत्मिक युद्ध और दो बीज" के टीचिंग नोट्स पढ़ें जो www.treasurehisword@gmail.com के पेज 5 पर दिए गए हैं।

गिनती 13:33 फिर हम ने वहाँ नपीलों को, अर्थात् **नपीली जातिवाले अनाकवंशियों** को देखा; और हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे।

यहोशू और कालेब ने विश्वास किया। परन्तु बाकी लोगों ने इन दानव समान लोगों के भय के कारण परमेश्वर के वचन पर विश्वास नहीं किया, और परिणामस्वरूप वे "संघर्ष करते" और अगले चालीस वर्षों तक जंगल में भटकते रहे, जो परमेश्वर की सम्पूर्ण प्रतिज्ञाओं और पूरी आशीषों से रहित था। मैं सोचता हूँ कि यहाँ एक सबक है। आज कितने ऐसे विश्वासी हैं जो परमेश्वर की आशीषों और प्रतिज्ञाओं से दूर होकर जंगल में भटक रहे हैं???

जंगल की यात्रा के बाद, यहोशू उन्हें प्रतिज्ञात देश में ले गया, और कालेब जो उस समय 85 साल का था, उसने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया और कहा, यहोशू 14:12 इसलिये अब वह पहाड़ी मुझे दे जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की थी; तू ने तो उस दिन सुना होगा कि उसमें **अनाकवंशी** रहते हैं, और बड़े बड़े गढ़वाले नगर भी हैं; परन्तु क्या जाने सम्भव है कि **यहोवा मेरे संग रहे**, और उसके कहने के अनुसार **मैं उन्हें उनके देश से निकाल दूँ।** पद 14 इस कारण हेब्रोन कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब **का भाग** आज तक बना है, क्योंकि वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का **पूरी रीति से** अनुगामी था। पद 15 पहले हेब्रोन का नाम किर्यतर्बा था; वह अर्बा **अनाकियों** में सबसे बड़ा पुरुष था। और उस देश को लड़ाई से

शान्ति मिली। 15:14 और **कालेब ने** वहाँ से शेशै, अहीमन, और तल्मै नामक **अनाक** के **तीनों पुत्रों को निकाल दिया।**

- हमें कालेब के समान होना चाहिए और यदि कोई हमें सताने या प्रभावित करने वाली नपीली आत्मा या आत्माएँ हैं, उन सब को निकाल फेंकें।

परन्तु, इस्राएल के बाकी के गोत्र इस बात को पूरा नहीं कर पाए और उन्होंने वहाँ रहनेवाले लोगों को उस देश से जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था, **बाहर नहीं निकाला।** अतः **इन अंतरजातीय विवाहों** ने परमेश्वर के लोगों में वासनामय दुष्ट आत्मा को आने का चौड़ा मार्ग प्रदान किया। यहोशू 15:63; न्यायियों 1:27-36

इसलिए परमेश्वर ने कहा :

न्यायियों 2:1-5 यहोवा का दूत गिलगाल से बोकीम को जाकर कहने लगा, "मैं ने तुम को मिस्र से ले आकर इस देश में पहुँचाया है, जिसके विषय में मैं ने तुम्हारे पुरखाओं से शपथ खाई थी। और मैं ने कहा था, '**जो वाचा मैं ने तुम से बाँधी है, उसे मैं कभी न तोड़ूँगा;** 2 इसलिये **तुम इस देश के निवासियों से वाचा न बाँधना**; तुम उनकी वेदियों को ढा देना। **परन्तु तुम ने मेरी बात नहीं मानी।** तुम ने ऐसा क्यों किया है? 3 इसलिये मैं कहता हूँ, '**मैं उन लोगों को तुम्हारे सामने से न निकालूँगा;** और वे **तुम्हारे पांजर में काँटे**, और **उनके देवता तुम्हारे लिये फंदा ठहरेंगे**'।" 4 जब यहोवा के दूत ने सारे इस्राएलियों से ये बातें कहीं, तब वे लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे।

- यह दुष्ट बीज आज तक हमारे साथ बना हुआ है।
- अतः हम समझ सकते हैं कि एक **विश्वासी** के लिए यह इतना ज़रूरी क्यों होता है कि वह यीशु मसीह में **जो सच्चा विश्वासी है उस से विवाह करे।** और साथ ही विवाह से पहले शारीरिक सम्बन्ध बनाने, अश्लील सामग्री देखने, और सब तरह की शारीरिक वासनाओं से बचा रहे जो दुष्ट वासनामय आत्माओं को खुला द्वार देती हैं।

2 कुरिन्थियों 6:14-18 **अविश्वासियों** के साथ **असमान जूए में न जुतो,** क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? 15 और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? 16 और मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? **क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं**; जैसा परमेश्वर ने कहा है, **"मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला फिरा करूँगा**; और मैं उनका परमेश्वर हूँगा, और वे मेरे लोग होंगे।" 17 इसलिये **प्रभु कहता है**, "**उनके बीच में से**

निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा; 18 और मैं तुम्हारा पिता हूँगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होगे। यह **सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर** का वचन है।"

क्योंकि इस्राएल की संतान ने उन सब को बाहर नहीं निकाला था जो दुष्ट बीज से थे, अनाक/नपीली ...

यहोशू 11:21-23 उस समय यहोशू ने पहाड़ी देश में आकर हेब्रोन, दबीर, अनाब, वरन् यहूदा और इस्राएल दोनों के सारे पहाड़ी देश में रहनेवाले अनाकियों को नष्ट किया; यहोशू ने नगरों समेत उनका सत्यानाश कर डाला। 22 इस्राएलियों के देश में कोई अनाकी न रह गया; **केवल अज्जा, गत, और अशदोद में कोई कोई रह गए।** 23 **जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था, वैसा ही यहोशू ने वह सारा देश ले लिया**; और उसे इस्राएल के गोत्रों और कुलों के अनुसार बाँट करके उन्हें दे दिया। **और देश को** लड़ाई से **शान्ति मिली।**

ये दानव, नपीली लोग, केवल **अज्जा, और गत** नामक क्षेत्र में रह गए थे, और बाद में दाऊद ने गोलियत नाम के एक नपीली को अपनी गोफन से मार गिराया था :

1 शमूएल 17:4 तब पलिश्तियों की छावनी में से **गोलियत** नामक एक वीर निकला, जो **गत** नगर का था, और उसकी लम्बाई छ: हाथ एक बित्ता थी। पद 45-46 दाऊद ने पलिश्ती से कहा, "तू तो तलवार और भाला और साँग लिये हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूँ, **जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है। 46 आज के दिन यहोवा तुझ को मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझ को मारूँगा, और तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूँगा।**

- मेरा ख्याल है कि दाऊद को वह सब बातें बताई गई होंगी जो यहोशू ने इस्राएलियों से इन दानवों को मिटा देने के विषय में कही थीं। और इस कारण उसने परमेश्वर के उस वचन पर विश्वास किया जो यहोशू द्वारा बोला गया था। वह जानता था कि परमेश्वर उसके साथ है और वह उस दानव गोलियत को **हरा देगा।**
- और हम इसी तरह अपने युद्ध जीतते हैं और इन दुष्ट दानवों को, यानी इन दुष्ट आत्माओं को हराते हैं जो हमें पाप में गिराने की कोशिश करती हैं। हमें आज्ञाकारी रहना चाहिए और उस देश को अपने वश में कर लेना चाहिए जो परमेश्वर हमें देता है। परमेश्वर आपको वैसे मजबूत करेगा जैसे उसने दाऊद को किया था, क्योंकि वह इन दुष्ट नपीली आत्माओं से घृणा करता है।

- जैसा परमेश्वर ने यहोशू 1:3 में कहा उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा, अर्थात् जिस जिस स्थान पर तुम पाँव धरोगे **वह सब मैं तुम्हें दे देता हूँ।**
- रोमियों 16:19-20 **तुम्हारे आज्ञा मानने** की चर्चा सब लोगों में फैल गई है, **इसलिये** मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूँ, **परन्तु** मैं यह चाहता हूँ कि तुम भलाई के लिये **बुद्धिमान** परन्तु बुराई के लिये **भोले** बने रहो। और पद 20 शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा।

मैं उम्मीद करता हूँ कि आप सब परमेश्वर के दृष्टिकोण से "**प्रभु कहता है कि उनके बीच में से निकलो और अलग रहो**" के **महत्व** को अब देख पाएंगे और समझ पाएंगे।

भीड़ का अनुसरण **मत करो।** अविश्वासी से विवाह **मत करो।** इस बात पर बड़ा ध्यान दो कि आपके मित्र कौन हैं। और अपने और हम सब के विरुद्ध आनेवाले दानवों का दृढ़ता से सामना करो।

इफिसियों 4:22-24 तुम पिछले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो 23 और अपने मन के **आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ**, 24 और **नये मनुष्यत्व को पहिन लो** जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की **धार्मिकता** और **पवित्रता** में सृजा गया है। 27 **और न शैतान को अवसर दो।**

IX. और अधिक स्पष्टता देनेवाले/ पुष्टि करनेवाले वचन :

व्यवस्थाविवरण 10:15 तौभी यहोवा ने **तेरे पूर्वजों** से स्नेह और प्रेम रखा, और उनके बाद तुम लोगों को जो उनकी सन्तान (अक्षरशः बीज) हो सब देशों के लोगों के मध्य में से चुन लिया, जैसा कि आज के दिन प्रकट है।

यशायाह 53:10 तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब वह अपना प्राण दोषबलि करे, **तब वह अपना वंश** (अक्षरशः बीज) **देखने पाएगा।**

रोमियों 4:13 क्योंकि यह **प्रतिज्ञा** कि वह जगत का वारिस होगा, न अब्राहम को न **उसके वंश** (अक्षरशः उसके बीज) को व्यवस्था के द्वारा दी गई थी, परन्तु **विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली।**

पद 16 इसी कारण प्रतिज्ञा **विश्वास** पर आधारित है कि **अनुग्रह** की रीति पर हो, कि वह उसके **सब वंशजों**

(अक्षरशः बीज) **के लिये दृढ़ हो,** न कि केवल उसके लिये जो व्यवस्थावाला है वरन् **उनके लिये भी जो अब्राहम के समान विश्वासवाले हैं; वही तो हम सब का पिता है।**

- **विश्वास पर** आधारित है कि **अनुग्रह** की रीति पर –> शाब्दिक यूनानी पठन। अनुग्रह मुफ्त वरदान है। यह फिर इस बात को प्रकट करता है कि विश्वास अनुग्रह के द्वारा मुफ्त वरदान है।

गलातियों 3:23-27 पर **विश्वास के आने** से पहले व्यवस्था की अधीनता में हमारी रखवाली होती थी, और **उस विश्वास** के **आने तक जो प्रगट होनेवाला था,** हम उसी के बन्धन में (सुनिश्चित) रहे। 24 इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिये हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। 25 परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे। **बच्चों के समान।**

- यह बताता है कि हम **विश्वास के आने** से पहले भी **उसकी संतान** थे, और हमारे विश्वास करने तक व्यवस्था की अधीनता में **हमारी** रखवाली होती थी।

- यदि **विश्वास आता** है तो इसका अर्थ है कि वह हम से उत्पन्न नहीं होता। यह अनुग्रह का वरदान है।

- देखें 1 पतरस 1: 1-3 पतरस … उन **परदेशियों** (परदेशी, नागरिक नहीं) के नाम जो ...परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार **चुने** गए हैं। 21 जिसने ...अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये **नया जन्म दिया।** 21 उसके द्वारा **तुम उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो।** 23 कि तुम ने नाशवान् (मानवीय, संसार का) नहीं पर अविनाशी **बीज** (स्वर्गीय) से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा **नया जन्म पाया है।**

- 2 पतरस 1:1 उन्हें लिखा … जिन्होंने हमारे समान बहुमूल्य **विश्वास प्राप्त किया है।**

गलातियों 3:26 क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो।

  - इससे पहले कि हमारा स्वाभाविक जन्म होता**, हम परमेश्वर की संतान थे**, **और** उस समय तक रहे जब हमारे पास **"विश्वास आया"** और हमने "उस विश्वास को **ग्रहण** किया और **विश्वास** किया।" फिर उस बिंदु पर हम परमेश्वर के पुत्र हो गए, केवल संतान ही नहीं रहे क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे "**भीतर**" था कि हमें सिखाए और हमें समझ दे।

गलातियों 3 29 और **यदि** तुम मसीह के **हो** (कुछ नहीं हैं। लेकिन इससे पहले कि हमारा जन्म होता, हम उसके हैं, क्योंकि उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले से ही चुन रखा था) तो अब्राहम के वंश (बीज) और **प्रतिज्ञा** के अनुसार (कि वह कई जातियों का पिता होगा) वारिस भी हो। गलातियों 4:1 मैं यह कहता हूँ कि

वारिस जब तक बालक (परमेश्वर का) है, यद्यपि **सब वस्तुओं का स्वामी है**, तौभी उसमें और दास में कोई भेद नहीं। 2 परन्तु **पिता के ठहराए हुए समय** तक संरक्षकों और प्रबन्धकों के वश में (व्यवस्था) रहता है। 3 वैसे ही हम भी, **जब बालक थे** (नया जन्म पाने से पहले), तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे। 4 परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, 5 ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और **हम को लेपालक होने का पद मिले।**

- यूनानी शब्द जिसका अनुवाद "**लेपालक**" हुआ है, उसका शाब्दिक अर्थ **"वयस्क पुत्र को स्थान देना"** है, जैसे यहूदी परम्परा बार-मित्स्वाह में होता था, जहाँ पुत्र जब 14 वर्ष की आयु में पहुँचता था तो उसे वयस्क माना जाता था।

- "लेपालक पुत्र" यूनानी शब्द υἱοθεσίαν (ह्वी-ओथ-एसी-आ) से आता है; जो दो शब्दों से बना है υἱός - **पुत्र** और τίθημι – **रखना या स्थापित करना।**

- इसलिए इसका शाब्दिक अनुवाद ऐसा है : **हम संतान थे**, लेकिन **पिता द्वारा निर्धारित समय पर हमें पुत्र के रूप में स्थापित किया गया- वयस्क पुत्र या पुत्रियाँ**, जब हमने विश्वास किया और हमें सब बातें दिखाने और सिखाने के लिए पवित्र आत्मा हमारे भीतर आया था।

- **हम हमेशा उसके बच्चे थे**, परमेश्वर की संतान, जिन्हें उसने जगत की उत्पत्ति से पहले ही चुन लिया था, और ... **हम कभी शैतान के बीज नहीं थे। हमें कभी गोद (लेपालक) नहीं लिया गया** जैसा आज संसार में इसका अर्थ समझा जाता है।

- लेपालक का अनुवाद गलत धर्मवैज्ञानिक पक्ष को दिखाता है और यह यूनानी शब्द का सटीक अनुवाद नहीं है।

- बाइबल अनुवादों में व्यक्तिगत हस्तक्षेप एक ऐसा मामला है जिससे 1611 की KJV भी अछूती नहीं थी, क्योंकि तब विद्वानों को **राजा के दिशा निर्देशों के अनुसार पवित्रशास्त्र में काटा-छांटी करनी पड़ी थी** – इन में से एक यह था कि KJV बिशप की बाइबल का खंडन नहीं कर सकती थी।

- लेपालक की परिभाषा यह है : *"किसी दूसरे माता-पिता के बच्चे को स्वेच्छा से अपने के रूप में अपना लेना।"*
- सच्चे विश्वासी कभी भी शैतान के बीज नहीं थे! ! !

गलातियों 4:6 **और तुम जो पुत्र हो** – तुम परमेश्वर के हो!

- "परमेश्वर से उत्पन्न" यूहन्ना 1:13,
- "ऊपर से जन्मे" अक्षरशः यूनानी यूहन्ना 3:3,

- अब्राहम का बीज : **उसके वंश** (यूनानी : उसका बीज) **रोमियों** 4:13 और 16

इसलिये परमेश्वर ने अपने **पुत्र के आत्मा** को, जो 'हे अब्बा, हे पिता' कहकर पुकारता है, हमारे हृदयों में (जब हमारा नया जन्म हुआ) भेजा है। 7 इसलिये **तू अब दास नहीं** (संसार की मूल वस्तुओं के अधीन बंदी), **परन्तु पुत्र है** (परिपक्व पुत्र या पुत्री); और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा **वारिस** भी हुआ।

इफिसियों 1:3-6 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है। 4 जैसा उसने हमें **जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया** कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। 5 और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये **पहले से ठहराया** कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके **"पुत्र के रूप में नियुक्त"** हों (सही अनुवाद, लेपालक नहीं), 6 कि **उसके उस अनुग्रह** की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंतमेंत दिया।

हम वह हैं जो हम हैं, सौ प्रतिशत **उसके अनुग्रह** के द्वारा हैं और इसमें हमारी योग्यता, प्रयास या कार्य का कुछ लेना-देना नहीं है।

उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंतमेंत दिया।

1 यूहन्ना 3:1-3 देखो, पिता ने हम से कैसा **प्रेम** किया है कि हम **परमेश्वर की सन्तान** कहलाएँ; और हम हैं भी। इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना। 2 हे प्रियो, अब (अवस्थांतर या बल देने का क्रियाविशेषण) हम **परमेश्वर की सन्तान** हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम **उसके समान होंगे,** क्योंकि उसको **वैसा ही देखेंगे** जैसा वह है। 3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है।

धन्यवाद हो पिता !!! हम बहुत आभारी हैं !!!

X. **हमारे प्रभु यीशु मसीह की महान विजय,** वह भविष्यवाणी "स्त्री का बीज जो सर्प के सिर को कुचल डालेगा"

उसकी विजय का आरम्भ तब हुआ जब उसने अपने को दीन किया और अपना स्वर्गीय सिंहासन, अपना मुकुट, अपने अधिकार और स्वर्ग त्यागकर स्वयं को शून्य कर दिया, और मानव रूप में इस पृथ्वी पर आ गया।

फिलिप्पियों 2:6-11 जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के **तुल्य** होने को अपने वश में

रखने की वस्तु न समझा। 7 वरन् अपने आप को ऐसा **शून्य कर दिया**, और **दास का स्वरूप** धारण किया,और मनुष्य की समानता में हो गया। 8 और **मनुष्य के रूप में** प्रगट होकर अपने आप को **दीन किया**, और यहाँ तक **आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।** 9 इस कारण **परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया,** और उसको **वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है,** 10 कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब **यीशु के नाम पर घुटना टेकें**; **11 और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।**

कुलुस्सियों 2:13-15 उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, **उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया** (कैसे), **14 और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला,** और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है। (इसका परिणाम यह हुआ) **और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई।**

> यीशु मसीह के क्रूस, उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने ने
> “सर्प के सिर को कुचल डाला।”

1 कुरिन्थियों 2:8-9 इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि वे जानते तो **तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते।**

इब्रानियों 1:3-4 वह पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर **महामहिमन् के दाहिने जा बैठा**

- पाप और शैतान पर पूरी विजय प्राप्त की गई और यह सम्पूर्ण थी।

इब्रानियों 10:12-14 पापों के बदले **एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढ़ाकर वह** परमेश्वर के दाहिने जा बैठा, 13 और उसी समय से इसकी **बाट जोह** रहा है, कि उसके **बैरी उसके पाँवों के नीचे की पीढ़ी बनें।** 14 क्योंकि उसने **एक ही चढ़ावे** के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, **सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है।**

- उसका काम तो समाप्त है ... वह हमारी प्रतीक्षा कर रहा है कि हम उस कार्य को समाप्त करें जो उसने हमें सौंपा है।

मत्ती 24:14 और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, **तब अन्त आ जाएगा।**

रोमियों 16:20 **शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा।** उस अधिकार और सामर्थ्य के द्वारा जो हमें दी गई है, अब हम दिन प्रति दिन "सर्प का सिर कुचलने" में भागीदार होते हैं।

XI. अंत समय में जीना:

इस्राएल का पवित्र और उसका सृष्टिकर्ता यहोवा यों कहता है: "**मेरी सन्तान** पर घटित **होनेवाली घटनाओं के विषय में मुझ से पूछो,** और मेरे हाथों के कार्यों को मुझ पर ही छोड़ दो। यशायाह 45:11

रोमियों 13:11- समय को **पहिचान** कर ऐसा ही करो, इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से **जाग उठने** (वास्तविकता के लिए जाग उठना, आत्मिक वास्तविकता) की घड़ी आ पहुँची है; क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार (इस वर्तमान पापी युग से छुटकारा) निकट है। (12) रात बहुत बीत गई है, और **दिन** (प्रभु का दिन) **निकलने पर है;** इसलिये हम अन्धकार के कामों को **त्याग कर ज्योति के हथियार बाँध लें।** (13) जैसा दिन को **शोभा** देता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें, न कि लीला-क्रीड़ा (रंगरेली) और पियक्कड़पन में, न व्यभिचार और लुचपन (कामुकता और अनैतिकता) में, और न झगड़े और डाह में। (14) वरन् प्रभु यीशु मसीह को **पहिन लो,** और **शरीर की अभिलाषाओं** को **पूरा करने का उपाय न करो।**

हम आत्मिक युद्ध के समय में जी रहे हैं, और हमें इस्साकार के पुत्रों की तरह बनना चाहिए :

इतिहास 12:23 फिर लोग **लड़ने के लिये हथियार बाँधे** हुए हेब्रोन में दाऊद के पास इसलिये आए कि यहोवा के वचन के अनुसार शाऊल का राज्य उसके हाथ में कर दें : (32) इस्साकारियों में से जो **समय को पहचानते** थे कि इस्राएल को (परमेश्वर के लोगों को) क्या करना उचित है

- सिपाही जो भली प्रकार से प्रशिक्षित, अनुशासित और लक्ष्य केन्द्रित होते हैं, वे स्वामी की इच्छा को जानते हैं, और साथ ही दुश्मन की चालों को भी समझते हैं, पूर्ण समर्पित, यहाँ तक कि मृत्यु तक भी।

2 तीमुथियुस 3:1-5 पर यह **स्मरण रख** कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएँगे। (2) क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, (3) दयारहित, क्षमारहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी, (4) विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन् सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे। (5) वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे; **ऐसों से परे रहना।**

2 पतरस 3:3-4 पहले यह **जान लो** कि अन्तिम दिनों में हँसी **ठट्ठा करनेवाले** आएँगे जो अपनी ही

अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे (4) और कहेंगे, "**उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई**? क्योंकि जब से बापदादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि के आरम्भ से था?

मत्ती 24:4-14 सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए, (5) क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं मसीह हूँ', और बहुतों को भरमाएँगे। (6) तुम **लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे**, तो घबरा न जाना क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय **अन्त न होगा।** (7) क्योंकि **जाति पर जाति,** और **राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा**, और जगह जगह **अकाल** पड़ेंगे, और **भूकम्प** होंगे।. (8) ये सब बातें पीड़ाओं का **आरम्भ होंगी।** (9) तब वे **क्लेश देने के लिये तुम्हें पकड़वाएँगे**, और तुम्हें **मार डालेंगे**, और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से **बैर** रखेंगे। (यह बात बहुत लम्बे समय से इस्राएल के लिए सच्ची ठहरी है और साथ ही हिन्दू और इस्लामी देशों में रहनेवाले विश्वासियों के लिए भी) (10) तब **बहुत से ठोकर खाएँगे**, और **एक दूसरे को पकड़वाएँगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे।** (11) बहुत से **झूठे भविष्यद्वक्ता** उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएँगे। (12) अधर्म के बढ़ने से बहुतों का **प्रेम ठण्डा पड़ जाएँगा**, (13) परन्तु **जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।** (14) और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में **प्रचार किया जाएगा**, कि सब **जातियों** पर गवाही हो, **तब अन्त आ जाएगा।**

मत्ती 24:33 **इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो कि वह निकट है, वरन् द्वार ही पर है।**

मत्ती 24:34 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा।

उपरोक्त पद आज के समय के बारे में बताते हैं जिसमें हम रह रहे हैं।
हमें जानना चाहिए और सदा स्मरण रखना चाहिए कि :

- जैसे यीशु संसार नहीं है, वैसे ही हम भी संसार के नहीं हैं (यूहन्ना 17:16)

- परन्तु हमारी **नागरिकता स्वर्ग की है**, जहां से हम उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आगमन की प्रतीक्षा उत्सुकता से कर रहे हैं। (फिलिप्पियों 3:21)

- हम पृथ्वी पर **परदेशी** और **पराए** हैं (इब्रानियों 11:13)

- हम मसीह के राजदूत हैं, जो पराए देश में रह रहे हैं.2 कुरि 5:20

- हमारा मिशन उस कार्य को समाप्त करना है जिसके लिए यीशु इस जगत में आया :
  खोए हुओं को **ढूँढने** और **बचाने** मत्ती 24:14; 28:18-20

नमक और ज्योति के समान होने– मत्ती 5:13

समय के चिह्नों को देखकर ऐसा लगता है मानो हम "अंतिम दिनों" के द्वार पर हैं। यह समय क्लेश का समय होगा। परन्तु इससे पहले क्लेश का समय शुरू हो, कुछ अद्भुत होगा।

XII. विश्वासियों का बड़ा निर्गमन

2 थिस्सलुनीकियों 2:1-2 हे भाइयो, अब हम अपने **प्रभु यीशु मसीह के आने**, और **उसके पास अपने इकट्ठे होने** के विषय में तुम से विनती करते हैं (2) कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा, जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि **प्रभु का दिन** आ पहुँचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और न तुम घबराओ।

- थिस्सलुनीकियों के विश्वासी ऐसे कठिन समय में रह रहे थे, कि उन्होंने सोचा कि *"प्रभु का दिन"* आ चुका है और वे *"उसके पास अपने इकट्ठा होने"* से चूक गए हैं।

- ये पौलुस की उस शिक्षा की ओर संकेत करता है कि *"प्रभु का दिन"* आने से पहले विश्वासी *"प्रभु के पास उठा लिए जाएंगे।"* और उन्हें यह समझाने के लिए कि *"प्रभु का दिन"* अभी नहीं आया है, पौलुस कहता है :

पद 3-4: किसी रीति से किसी के धोखे में न आना, क्योंकि वह दिन (प्रभु का दिन) न आएगा **जब तक धर्म का त्याग** (विश्वास से बहक) न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो।

- 1 तीमुथियुस 4:1-2 परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से **बहक जाएँगे।** (देखें 1 यूहन्ना 2:17-19; 2 पतरस 2:20-22)

और वह **पाप का पुरुष** अर्थात् **विनाश का पुत्र** प्रगट न हो। (4) जो विरोध करता है, और हर एक से जो ईश्वर या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को **ईश्वर ठहराता है।**

- ये सब नहीं हुआ था, और यह स्पष्ट है कि यह होने से पहले, सच्चे विश्वासी *"उसके पास इकट्ठा किए जाएंगे।"*

दानिय्येल 12:1 … तब ऐसे **संकट का समय** होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ, न होगा; परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की **पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे।**

ऐसा प्रतीत होता है कि *"प्रभु का दिन"* आने से पहले अर्थात पृथ्वी पर महक्लेश के समय से पहले, प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया — समस्त विश्वासी—इस संसार से निकाल लिए जाएँगे।

- प्रभु का दिन : यशायाह 13:6+; यहेजकेल 30:3 ; योएल 1:15; 2:1, 11, 31, 3:14; आमोस 5:18-20; सपन्याह 1:14-18; मलाकी 4:5; प्रेरितों 2:20; 1 थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 पतरस 3:10

मत्ती 24:37 जैसे **नूह** के दिन थे, वैसा ही **मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।** (38) क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि **नूह जहाज पर न चढ़ा** (दंड से पहले), उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें विवाह होते थे। (39) और जब तक **जल-प्रलय आकर** उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; **वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।** (40) उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। (41) दो स्त्रियाँ चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।

नूह के दिनों के समान हमें भी अपना जहाज़ तैयार करते रहना चाहिए :

विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, **चेतावनी** पाकर भक्ति के साथ अपने **घराने के बचाव** के लिये जहाज **बनाया।** इब्रानियों 11:7
नूह और उसके परिवार ने जहाज़ में प्रवेश किया, और **परमेश्वर ने जहाज़ का द्वार बंद कर दिया**, केवल वही थे जो परमेश्वर द्वारा बचाए गए, या दंड अर्थात क्लेश से बचाए गए।

उन्होंने अवश्य दंड को देखा, उसमें से गए, और उसे अनुभव किया, लेकिन सुरक्षित स्थान से, जहाँ से वे "*अंत तक सुरक्षित रहे और बचाए गए।*"

लूका भी नूह के विषय में लिखता है और फिर निम्नलिखित भी जोड़ देता है :
लूका 17:28-31 और जैसा **लूत** के दिनों में हुआ था कि लोग खाते-पीते, लेन-देन करते, पेड़ लगाते और घर बनाते थे; (29) **परन्तु जिस दिन लूत सदोम से निकला, उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और सब को नष्ट कर दिया। (30) मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा।**

स्मरण करें — परमेश्वर ने कहा था **कि वह** सदोम को नष्ट **नहीं** करेगा, यदि वह धर्मी लोग होंगे (उत्पत्ति 18:26-33). तो इस अंतिम विनाश में भी **धर्मी लोगों को पहले ही निकाल लिया जाएगा।**

उत्पत्ति 19:29 और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने उस तराई के नगरों को, जिनमें लूत रहता था, उलट-पुलट कर नष्ट किया, तब उसने अब्राहम को याद करके **लूत को उस घटना से** (इससे पहले वह घटती) **बचा लिया।**

परमेश्वर ने अपने चुने हुओं को मिस्र में दंड और विपत्तियों **से बचाया**, और फिर उसने अंतिम दंड से पहले अद्भुत रीति से लाल समुद्र को दो भाग करके उन्हें मिस्र से बाहर निकाला था।

अतः हम निम्नलिखित वचनों से ये समझ सकते हैं कि सभी सच्चे विश्वासी महाक्लेश के समय से **पहले "निकाल लिए जाएँगे"**, कुछ लोग इसे "रैपचर" भी कहते हैं। ("रैपचर" शब्द बाइबल का नहीं है। यह एक लातिनी शब्द है जिसका अर्थ है "हवा में उठाया जाना।")

प्रकाशितवाक्य 3:10 तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिये मैं भी **तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूँगा** जो पृथ्वी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे संसार पर आनेवाला है।

1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 क्योंकि **यदि हम विश्वास** करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं (वे विश्वासी जो मर चुके हैं और तब से वे आत्मा में प्रभु के साथ हैं) **उसी के साथ ले आएगा।** (15) क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं (मरे हुओं) से कभी आगे न बढ़ेंगे। (16) क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। (देह का पुनरुत्थान जो अपनी-अपनी उन आत्माओं से जा मिलेंगी जो प्रभु के साथ थीं) (17) तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे कि **हवा में प्रभु से मिलें**; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।
(18) इस प्रकार इन बातों से **एक दूसरे को शान्ति दिया करो।**

ये परिच्छेद आगे भी जारी है : अध्याय 5:1-11
पर हे भाइयो, इसका प्रयोजन नहीं कि **समयों और कालों के विषय में** तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए। (2) क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही **प्रभु का दिन** (महान अंतिम न्याय) आनेवाला है। (3) जब लोग कहते होंगे, "कुशल है, और कुछ भय नहीं," तो उन पर एकाएक **विनाश** आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और **वे किसी रीति से न बचेंगे।** (4) पर हे **भाइयो, तुम तो अन्धकार में नहीं हो** कि वह दिन **तुम** पर चोर के समान आ पड़े। (5) क्योंकि **तुम सब ज्योति की सन्तान** और दिन की सन्तान हो; **हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं।** (6) ... पर जागते और सावधान रहें। ... (8) ... विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर सावधान रहें। (9)

क्योंकि **परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं** (क्रोध अंतिम न्याय का है, विश्वासी वहाँ नहीं होंगे), **परन्तु** इसलिये ठहराया है कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा **उद्धार प्राप्त करें।** (10) वह हमारे लिये इस कारण मरा कि हम चाहे जागते हों चाहे सोते हों, **सब मिलकर उसी के साथ जीएँ।** (11) इस कारण **एक दूसरे को शान्ति दो** और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो।

1 कुरिन्थियों 15:50-54 भी अलौकिक घटना का वर्णन करता है : देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ : **हम** सब नहीं सोएँगे (सब नहीं मरेंगे), **परन्तु सब बदल जाएँगे,** (52) **और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा।** क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे (विश्वासियों की मृत देह। उनकी आत्मा प्रभु के साथ थी। 2 कुरि 5:8) अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, **और हम** (जो पृथ्वी पर जीवित है) **बदल जाएँगे।** (53) क्योंकि अवश्य है कि यह नाशवान् देह अविनाश (पुनरुत्थित देह) को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। (54) और जब यह नाशवान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा : "जय ने मृत्यु को निगल लिया।

ये निम्नलिखित पद देह के पुनरुत्थान को समझने में सहायक हैं :

1 कुरिन्थियों 15:42-45 मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। **शरीर** नाशवान् दशा में बोया जाता है और अविनाशी रूप में जी उठता है। (43) वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है, और सामर्थ्य के साथ जी उठता है। (44) स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है : जबकि **स्वाभाविक देह** है, तो **आत्मिक देह** भी है।

तुरही के फूँकने पर — हम *पलक झपकते ही, क्षण भर में प्रभु के साथ हवा में जा मिलेंगे। और इस प्रकार हम सदा प्रभु के साथ होंगे।"*

XIII. क्लेश

मत्ती 24:15-28 "इसलिये जब तुम **उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु** को जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखो (जो पढ़े, वह समझे), (16) तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ। (17) जो छत पर हो, वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे; (18) और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे। (19) "उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के लिये हाय, हाय। (20) प्रार्थना किया करो कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े। (21) क्योंकि उस समय ऐसा **भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ और न कभी होगा।** (22) यदि वे दिन घटाए न जाते तो कोई प्राणी न बचता, परन्तु चुने हुओं (जो क्लेश के समय विश्वास में आए हैं) के कारण वे दिन घटाए जाएँगे। (23) उस समय यदि कोई तुम से कहे, 'देखो, मसीह

यहाँ है!' या 'वहाँ है!' तो विश्वास न करना। (24) "क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, **और बड़े चिह्न, और अद्भुत काम दिखाएँगे** कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। (25) देखो, मैं ने पहले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है। (26) इसलिये यदि वे तुम से कहें, 'देखो, वह जंगल में है', तो बाहर न निकल जाना; या 'देखो, वह कोठरियों में है', तो विश्वास न करना। (27) "क्योंकि जैसे **बिजली** पूर्व से निकलकर पश्चिम तक **चमकती** है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।

- दूसरे शब्दों में — कोई भी उसके आगमन से चूक नहीं सकता

प्रकाशितवाक्य 13:2 जो **पशु** मैं ने देखा वह चीते के समान था ... (6) उसने **परमेश्वर की निन्दा करने** के लिये मुँह खोला कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात् स्वर्ग के रहनेवालों की निन्दा करे। (7) उसे यह भी अधिकार दिया गया कि पवित्र लोगों से लड़े और उन पर जय पाए, और उसे हर एक कुल और लोग और भाषा और जाति पर अधिकार दिया गया। (8) **पृथ्वी के वे सब रहनेवाले**, जिनके नाम उस मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की **पूजा करेंगे।** 9जिसके कान हों वह सुने ... (11) फिर मैं ने **एक और पशु** को पृथ्वी में से निकलते हुए देखा ... (12) **वह उस पहले पशु का सारा अधिकार उसके सामने काम में लाता था**; और पृथ्वी और उसके रहनेवालों से उस **पहले पशु की, जिसका प्राण-घातक घाव अच्छा हो गया था, पूजा कराता था।** (13) वह बड़े-बड़े चिह्न दिखाता था, यहाँ तक कि मनुष्यों के सामने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग बरसा देता था। (14) उन चिह्नों के कारण, जिन्हें उस पशु के सामने दिखाने का अधिकार उसे दिया गया था, **वह** पृथ्वी के रहनेवालों को **भरमाता** था और पृथ्वी के रहनेवालों से कहता था कि जिस पशु के तलवार लगी थी वह जी गया है, **उसकी मूर्ति** बनाओ। (15) उसे उस पशु की मूर्ति में प्राण डालने का अधिकार दिया गया कि पशु की मूर्ति बोलने लगे, और जितने लोग **उस पशु की मूर्ति की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले।** (16) उसने छोटे-बड़े, धनी-कंगाल, स्वतंत्र-दास **सब** के **दाहिने हाथ या उनके माथे पर एक एक छाप करा दी**, (17) कि उसको छोड़ **जिस पर छाप** अर्थात् उस पशु का नाम या उसके नाम का अंक हो, **अन्य कोई लेन-देन न कर सके।** (18) ज्ञान इसी में है : जिसे बुद्धि हो वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है, और उसका अंक **छः सौ छियासठ है।**

प्रकाशितवाक्य 14:9-13 **जो कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले (10) वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा, जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेम्ने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा।** (11) उनकी पीड़ा का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात दिन चैन न मिलेगा। (12) पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं।

XIV. पृथ्वी पर क्लेश लेकिन स्वर्ग में आनंद:

1. मसीह का न्याय आसन

रोमियों 14:10 हम सब के सब **परमेश्वर के न्याय सिंहासन** के सामने खड़े होंगे। (12) इसलिये हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना **लेखा देगा।**

मसीह का न्याय आसन स्वर्ग में प्रवेश पाने का मुद्दा नहीं है। पाप का दंड क्रूस पर पहले ही चुकाया जा चुका है (रोमियों 8:1-3)। केवल सच्चे विश्वासी ही प्रभु के सामने खड़े होंगे।

यह परमेश्वर के सेवकों के रूप में हमें प्रतिफल दिए जाने का विषय है।

2 कुरिन्थियों 5:10 क्योंकि अवश्य है कि हम **सब** का हाल **मसीह के न्याय आसन** के सामने खुल जाए, कि **हर एक** व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का **बदला** जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।

1 कुरिन्थियों 3:13-15 तो **हर एक का काम** प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिये कि **आग** के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है। (14) **जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा।** (15) यदि किसी का काम जल जाएगा, **तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा** परन्तु जलते-जलते।

इन बातों के लिए प्रतिफल दिया जाएगा :

1. राज्य में हमारे लगाने और सींचने का परिश्रम करना (1 कुरि 3:8)
2. मसीह की खातिर सताव और निंदा सहना (मत्ती 5:11-12)
3. धर्मी जीवन जीना, दिखावे का नहीं (मत्ती 6:1)
4. गरीबों को देना, दिखावे के लिए नहीं (मत्ती 6:3-4)
5. गुप्त में प्रार्थना करना (मत्ती 6:6)
6. गुप्त में उपवास रखना (मत्ती 6:18)
7. उसके सेवकों का स्वागत करना (मत्ती 10:41)
8. सेवा के लिए कुछ भी देना, चाहे वह पानी का ग्लास हो (मत्ती 10:42)
9. अपने शत्रुओं से प्रेम रखना, भला करना, उधार देना (लूका 6:35)

10. सुसमाचार का प्रचार करना (1कुरि 9:16-18)
11. जो कुछ भी करना, ख़ुशी से करना मानो प्रभु के लिए हो (कुलु 3:23-24)
12. मसीह के लिए निंदित होने को बड़ा धन समझना (इब्रा 11:26)

2 यूहन्ना 8 अपने विषय में चौकस रहो, कि जो परिश्रम हम ने किया है उसको तुम **गवाँ न दो, वरन् उसका पूरा प्रतिफल पाओ।**

प्रकाशितवाक्य 22:12 "देख, **मैं शीघ्र आनेवाला हूँ;** और **हर एक** के काम के अनुसार **बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है।**

हमें भी मुकुट दिया जाएगा :

1. परीक्षाओं में स्थिर रहने और निरंतर प्रभु से प्रेम रखने के लिए (याकूब 1:12)
2. सब बातों में आत्म-संयम रहने के लिए (1 कुरि 9:25)
3. उन लोगों के लिए जिन्हें हमने जीता है और शिष्य बनाया है (1 थिस्स 2:19)
4. विश्वासयोग्य बने रहने, अपनी दौड़ को पूरा करने, उससे प्रेम रखने के लिए (2 तीमु 4:7-8)

प्रकाशितवाक्य 3:11 मैं शीघ्र ही आनेवाला हूँ; जो कुछ तेरे पास है उसे थामे रह कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले।

2. मेमने का विवाह भोज

प्रकाशितवाक्य 19:7-10 आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि **मेम्ने का विवाह** आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। (8) उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया"- क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है। (9) तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, "यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो **मेम्ने के विवाह के भोज** में बुलाए गए हैं।" फिर उसने मुझ से कहा, "ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।"

XV. यीशु मसीह का दूसरा आगमन

मत्ती 24:29-31 उन दिनों के **क्लेश के तुरन्त बाद सूर्य अन्धियारा हो जाएगा**, और **चन्द्रमा का प्रकाश जाता रहेगा,** और **तारे आकाश से गिर पड़ेंगे** और **आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी।** (30) तब **मनुष्य के पुत्र** का चिह्न आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और **मनुष्य**

के पुत्र को बड़ी **सामर्थ्य** और **ऐश्वर्य** के साथ आकाश के बादलों पर **आते देखेंगे।** (31) वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से **उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे।**

- यहाँ "चुने हुए" इस्राएल और अन्यजातियों के वे लोग हैं जो क्लेश के समय विश्वास में आए थे।

प्रकाशितवाक्य 19:11-21 फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो **विश्वासयोग्य** और **सत्य** कहलाता है; और **वह** धर्म के साथ न्याय और युद्ध करता है। (12) उसकी आँखें आग की ज्वाला हैं, और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं। उस पर एक नाम लिखा है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता। (13) वह लहू छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है, और उसका नाम **परमेश्वर का वचन** है।

सभी विश्वासी, उसकी कलीसिया, उसकी दुल्हन उसके पास लौट आएँगे

(14) स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है। (15) जाति जाति को मारने के लिये उसके मुँह से एक **चोखी तलवार** निकलती है। वह **लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा,** और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा। (16) उसके वस्त्र और जाँघ पर यह नाम लिखा है : **"राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।"**

(19) फिर मैं ने उस **पशु,** और **पृथ्वी के राजाओं** और उनकी सेनाओं को उस घोड़े के सवार और उसकी **सेना से लड़ने के लिये इकट्ठे देखा।**

पशु और झूठे भविष्यवक्ता का विनाश :

(20) वह पशु, और उसके साथ वह **झूठा भविष्यद्वक्ता पकड़ा गया** जिसने उसके सामने ऐसे चिह्न दिखाए थे जिनके द्वारा उसने उनको भरमाया जिन पर उस पशु की छाप थी और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे। **ये दोनों जीते जी उस आग की झील में,** जो गन्धक से जलती है, **डाले गए।** (21) **शेष लोग** उस घोड़े के सवार की तलवार से, जो उसके मुँह से निकलती थी, **मार डाले गए;** और सब पक्षी उनके मांस से तृप्त हो गए।

शैतान को एक हज़ार वर्ष के लिए बंदी बनाया जाना :

(20:1) फिर मैं ने एक **स्वर्गदूत** को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके हाथ में अथाह-कुंड की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी। (2) उस ने उस अजगर, अर्थात् पुराने साँप को, जो **इब्लीस** और **शैतान** है, **पकड़ के हज़ार वर्ष के**

लिये बाँध दिया, (3) और उसे **अथाह-कुंड में डालकर** बन्द कर दिया और उस पर मुहर लगा दी कि वह **हज़ार वर्ष के पूरे होने तक** जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए। इसके बाद अवश्य है कि वह थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए।

(4) फिर मैं ने **सिंहासन** देखे, और **उन** पर लोग बैठ गए, (प्रकाशितवाक्य 3:21) और उनको **न्याय करने का अधिकार दिया गया।** मैं ने उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके **सिर** यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण **काटे गए** थे, और जिन्होंने **न उस पशु की**, और न उसकी मूर्ति की **पूजा की थी**, और **न उसकी छाप** अपने माथे और हाथों पर ली थी। वे जीवित होकर (उनकी पुनरुत्थित देह जिलाई गई) मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते (5) जब तक ये हज़ार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे। यह तो **पहला पुनरुत्थान** है। (6) धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहले पुनरुत्थान का भागी है। ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे और उसके साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे।

सब विश्वासी यीशु के साथ राज करेंगे :

प्रकाशितवाक्य 5:9-10 तू इस पुस्तक के लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है, क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू से प्रत्येक **कुल, भाषा, लोग और जाति** में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक **राज्य और याजक बनाया और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे।**

केवल हज़ार वर्ष के लिए नहीं बल्कि सदा के लिए :

> प्रकाशितवाक्य 22:5 फिर कोई रात न होगी। उन्हें न दीपक न सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें प्रकाश देगा, **और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।**

> **पृथ्वी पर हमारा पूरा समय प्रभु के साथ भविष्य में राज करने के प्रति हमें तैयार करने के उद्देश्य के लिए है।**

> हे मेरे भाइयो, जब तुम विभिन्न परीक्षाओं का सामना करते हो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो। याकूब 1:2

आइए हम यीशु द्वारा बताए इस दृष्टान्त को देखें :

लूका 19:12-14 एक धनी मनुष्य (यीशु मसीह) दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर लौट आए (यीशु वापस स्वर्ग में लौट गए हैं)। उसने अपने दासों में से दस को (सबको नहीं) बुलाकर उन्हें दस मुहरें (वरदान

और योग्यताएं) दीं और उनसे कहा, 'मेरे लौट आने तक लेन-देन करना। (15-19) जब वह राजपद पाकर लौटा, तो ऐसा हुआ कि उसने अपने दासों को जिन्हें रोकड़ दी थी, अपने पास बुलवाया (रैपचर) ताकि मालूम करे कि उन्होंने लेन-देन से क्या-क्या कमाया। तब पहले ने आकर कहा, 'हे स्वामी, तेरी मुहर से दस और मुहरें कमाई हैं।' उसने उससे कहा, 'धन्य, हे **उत्तम** दास! **तू बहुत ही थोड़े में विश्वासयोग्य निकला अब दस नगरों पर अधिकार रख।'** दूसरे ने आकर कहा, 'हे स्वामी, तेरी मुहर से पाँच और मुहरें कमाई हैं।' उसने उससे भी कहा, **'तू भी पाँच नगरों पर हाकिम हो जा।'**

यह हज़ार वर्षों के राज को "प्रभु के दिन" के नाम से जाना जाता है

> 2 पतरस 3:8 हे प्रियो, यह बात तुम से छिपी न रहे कि **प्रभु के यहाँ एक दिन हजार वर्ष के बराबर है,** और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है।

XVI. अंतिम न्याय – परमेश्वर का बड़ा श्वेत सिंहासन

2 पतरस 2:5 धर्म के प्रचारक **नूह** समेत आठ व्यक्तियों को बचा लिया;
(7-8) और **धर्मी लूत को** जो अधर्मियों के अशुद्ध चालचलन से बहुत दुःखी था **छुटकारा दिया।** (8) (क्योंकि वह धर्मी उनके बीच में रहते हुए और उनके अधर्म के कामों को देख देखकर और सुन सुनकर, हर दिन अपने सच्चे मन को पीड़ित करता था।)
(9-10) तो प्रभु भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है, (10) विशेष करके उन्हें जो अशुद्ध अभिलाषाओं के पीछे शरीर के अनुसार चलते और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं।

2 पतरस 3:7 पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे गए हैं कि **जलाए** जाएँ; और ये भक्तिहीन मनुष्यों के **न्याय और नष्ट होने के दिन** तक ऐसे ही रखे रहेंगे। … (10) परन्तु **प्रभु का दिन** चोर के समान आ जाएगा, उस दिन **आकाश** बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से **जाता रहेगा** और **तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे** और पृथ्वी और उस पर के काम **जल जाएँगे।** (11) जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलनेवाली हैं, **तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए,**

(12) और **परमेश्वर के उस दिन** की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए, जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे। (13) पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार **हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी।** (14) इसलिये, हे प्रियो, जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो, तो यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो

प्रकाशितवाक्य 20:11-21:6 फिर मैं ने एक **बड़ा श्वेत सिंहासन** और **उसको**, जो उस पर **बैठा** हुआ है, देखा; उसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली। (12) फिर मैं ने छोटे बड़े सब **मरे हुओं** को **सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा**, और **पुस्तकें खोली गईं**; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् **जीवन की पुस्तक**; और जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही **उनके** कामों के अनुसार **मरे हुओं का न्याय** किया गया। (13) समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे दे दिया, और **मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उनमें थे दे दिया**; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार **उनका न्याय किया गया।** (14) **मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए।** यह आग की झील दूसरी मृत्यु है; (15) और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।

मत्ती इन बातों को इस प्रकार से समझता है :

मत्ती 25:31-42 जब **मनुष्य का पुत्र** अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे, तो वह **अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा।** (32) और **सब जातियाँ** (सब जातिय समूह) **उसके सामने इकट्ठा की जाएँगी**; और जैसे चरवाहा **भेड़ों को बकरियों से** अलग कर देता है, वैसे ही वह **उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा।** (33) वह **भेड़ों को अपनी दाहिनी** ओर और **बकरियों को बाईं** ओर खड़ा करेगा। (34) तब **राजा अपनी दाहिनी** ओर वालों से कहेगा, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगो, **आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है।** (35) क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया; (36 मैं नंगा था, और तुमने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, और तुमने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, और तुम मुझे मिलने आए।'

. . . (40) तब **राजा** उन्हें उत्तर देगा, **'मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।'** (41) **"तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ,** जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।

- कृपया ध्यान दें : भेड़ और बकरियों को अलग करना हमारा काम नहीं है।

यह भी, कि उन लोगों के लिए **अनंत आग** क्यों, जिन्होंने सिर्फ विश्वास ही नहीं किया? क्या **अनंत आग** में डालने का यह पर्याप्त कारण है??

इसका उत्तर विस्तृत है और इसे फिर से जंगली बीज के दृष्टान्त में समझाया गया है। वे केवल "न विश्वास करनेवाले" ही नहीं है बल्कि वे "दुष्ट के बीज" हैं। शैतान ने उन्हें बोया है ताकि परमेश्वर की योजना को विफल करे और जैसे भी सम्भव हो, "उसके बीज," उसकी संतानों को हानि पहुंचाए। पहले जलप्रलय और

अंत में **अनंत आग।**

मत्ती 13: 38-43 … अच्छे बीज **राज्य की सन्तान हैं।** जंगली बीज **दुष्ट की सन्तान** हैं, (39) और शत्रु जिसने उन्हें बोया वह **शैतान** है। कटनी इस युग का अन्त है और फसल काटने वाले स्वर्गदूत हैं। (40) जिस प्रकार जंगली घास बटोरकर **आग में जला** दी जाती है, उसी प्रकार युग के अन्त में भी होगा। (41) मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा जो उसके राज्य में से **सब ठोकर के कारणों** तथा कुकर्मियों को एकत्रित करेंगे (42) और उन्हें **आग के भट्ठे** में डालेंगे। वहां **रोना और दांत पीसना** होगा। (43) तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे।

1 कुरिन्थियों 15:24-28 **इसके बाद अन्त होगा।** उस समय वह सारी प्रधानता, और **सारा अधिकार**, और **सामर्थ्य का अन्त करके राज्य को** परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। (25) क्योंकि जब तक वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। (26) सबसे अन्तिम बैरी जो नष्ट किया जाएगा, वह **मृत्यु** है। (27) क्योंकि **"परमेश्वर ने सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया है,"** परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके अधीन कर दिया गया है तो प्रत्यक्ष है कि जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, वह आप अलग रहा। (28) और जब सब कुछ उसके अधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके अधीन हो जाएगा, जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, ताकि सब में **परमेश्वर ही सब कुछ हो।**

XVII. नया आकाश और नई पृथ्वी

प्रकाशितवाक्य 21 फिर मैं ने **नये आकाश और नयी पृथ्वी** को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। (2) फिर मैं ने **पवित्र नगर नये यरूशलेम** को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा। वह उस दुल्हिन के समान थी जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। (3) फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। (4) वह उनकी **आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा**; और इसके बाद **मृत्यु न रहेगी**, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।"

(5) जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, "देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ।" फिर उसने कहा, "लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।"

(5) फिर उसने मुझ से कहा,

"ये बातें पूरी हो गई हैं। मैं अल्फा और ओमेगा,
आदि और अन्त हूँ।